Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 07/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

नैदानिक मनोविज्ञान की समस्याएँ **(Problems of Clinical Psychology):**

नैदानिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक प्रयुक्त शाखा (applied branch) है। इस शाखा में मनोवैज्ञानिकों का एक अच्छा प्रतिशत कार्यरत हैं। इस क्षेत्र में शोथ भी काफी हो रहे हैं। मनोविज्ञान की इस प्रयुक्त शाखा की भी कुछ समस्याएँ हैं जिन्हें नैदानिक मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोग अनुभव करते हैं। इन समस्याओं की जानकारियों से इसके स्वरूप का पता चलता है। ऐसी कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्न हैं-

1. निदान एवं मूल्यांकन से संबंधित समस्याएँ **(Problems related to diagnosis and assessment):**

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक प्रमुख कार्य मानसिक रोगियों का मूल्यांकन करना एवं मूल्यांकन के आलोक में रोग को निरूपित करना है। ऐसा करने में नैदानिक मनोवैज्ञानिक कई तरह की समस्याओं को अनुभव करते हैं। जैसे उनके सामने यह समस्या आती है कि रोगी के मुल्यांकन का प्रारूप क्या हो अर्थात् मूल्यांकन प्रेक्षण (observation) के आलोक में की जाय या मूल्यांकन परीक्षण प्रक्रिया के रूप में की जाय या मूल्यांकन के लिए साक्षात्कार विधि को प्रयोग में लाया जाय। मूल्यांकन के दौरान नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के सामने यह समस्या उत्पन्न होती है कि रोगी की चिकित्सा रोगी को अस्पताल में भर्ती कर की जाय या उसकी चिकित्सा एक बाह्य रोगी (out patient) के रूप में की जाय। अक्सर चिकित्सकों के सामने निदान सम्बन्धी समस्याएँ आती है जिसका उचित समाधान नहीं होने से निदान (diagnosis) गलत हो जाता है और नैदानिक मनोवैज्ञानिक अनुचित या अनुपयुक्त चिकित्सा पद्धति द्वारा रोगी की चिकित्सा करने लगते हैं जिससे रोगी की समस्या का समाधान होने के बजाय और उलझ जाती है।

2. नैदानिक परीक्षणों से संबंधित समस्याएँ **(Problems related to** diagnostic test):

रोग के सही पहचान के लिए नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को कुछ विशेष मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग करना पड़ता है जिन्हें नैदानिक परीक्षण कहा जाता है। इन परीक्षणों में बुद्धि परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण (Intelligence test & personality) काफी महत्व के हैं। नैदानिक मनोवीनिकों को इन परीक्षणों से संबंधित निम्न तरह की समस्याओं का भी सामना करना होता है-

(1) एक विश्वसनीय एवं बौद्ध परीक्षणों (Reliable and valid tests) का निर्माण कैसे किया जाय।
(ii) ऐसे उपलब्ध परीक्षणों की सार्थकता में कैसे बृद्धि की जाय।
(iii) यह पहचान कैसे की जाय कि कौन सा परीक्षण किस तरह के मानसिक रोगी के लिए सर्वाधिक उपयुक्त परीक्षण होगा ।

(iv) इन परीक्षणों से प्राप्त परिणाम के आधार पर उपचार करने में कितना भरोसा या विश्वास किया जाय। इन समस्याओं का सामना करते हुए नैदानिक मनोवैज्ञानिकों परीक्षणों के आधार पर निदान (diagnosis) करने तथा रोगी का उपचार करने में सतर्कता का परिचय देना पड़ता है।

3. उपचार से संबंधित समस्याएँ **(Problems related to treatment)**:

सीमित तथा महत्वपूर्ण अर्थ में नैदानिक मनोविज्ञान मानसिक रोगों के उपचार का विज्ञान कहा जा सकता है। अर्थात् उपचार नैदानिक मनोवैज्ञानिकों का एक महत्वपूर्ण कार्य है। लेवान डोस्की (Levan Doski, 1990) के अनुसार उपचार कार्य में भी नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को कुछ समस्याओं से जूझना पड़ता है। जैसे रोगी को किस तरह की चिकित्सा दी जाय अर्थात् रोगी की चिकित्सा वैयक्तिक चिकित्सा के माध्यम से की जाय। सामुहिक चिकित्सा (group therapy) विधि को प्रयोग में लाया जाय ? रोगी के लिए शाब्दिक मनोचिकित्सा (verbal psychotherapy) उपयुक्त होगया या असंवेदीकरण (desensitization) की चिकित्सा। चिकित्सा के दौरान रोगी के साथ कैसा संबंध और किस हद तक संबंध रखा जाना चाहिए। चिकित्सकीय सत्र का अन्त या समापन किस तरह किया जाना चाहिए आदि समस्याओं का स्वरूप इतना अधिक तकनीकी (technical) है कि एक सफल नैदानिकरण मनोवैज्ञानिकों को इन समस्याओं का सही समाधान या उत्तर ढूँढ़ने में काफी कठिनाई होती है।

4. शोध एवं शिक्षण से संबद्ध समस्याएँ **(Problems related to research and training):**

किसी भी विज्ञान की प्रगति एवं विकास विज्ञान के उस क्षेत्र में होने वाले शोध पर निर्भर करता है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को तरह-तरह के शोध करने पड़ते हैं जिसमें उन्हें काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है जिसमें उन्हें काफी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। जब नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को मस्तिष्कीय विकृतियों (brain disorders) से संबंधित शोध कार्य करना होता है तो उन्हें मनोरोग विज्ञानियों (psychiatrist) की सहायता अनिवार्य रूप से लेना होता है। विकृति का जब गिकि (organic) होता है तो मनोरोग विज्ञानियों या अन्य मेडिकल विशेषज्ञों की सहायता लेना पड़ता है। पर शोधकर्ता को उन विशेषज्ञों से वैसा सहयोग प्रायः नहीं मिलता जिसकी अपेक्षा की जाती है। फलतः शोधकार्य में रूकावट आती है।

शिक्षण से संबंधित समस्या भी नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के लिए चुनौती पूर्ण रहा है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को मनोविकृति (Psychopathology), परीक्षण कार्य (testing), साक्षात्कार कार्य (interviewing), चिकित्सा (therapy) व्यक्तित्व सिद्धन्त (personality theory) आदि विषयों का शिक्षण करना पड़ता है। उनके सामने यह समस्या होती है कि उपर्युक्त शिक्षण कार्य भाषण विधि से सम्पादित किया जाय या भाषण के साथ-साथ प्रदर्शन विधि (demonstration method) का भी उपयोग किया जाय। इन समस्याओं के उत्तर के संबंध में मनोवैौनिकों के बीच मतैव्य का अभाव है।

5. परामर्श एवं प्रशासनिक कार्यों से संबंधित समस्याएँ **(Problems related to consultation and administration work):**

नैदानिक मनोविज्ञान की कुछ समस्याएँ परामर्श (consultation) एवं प्रशासन (administration) से जुड़ी होती है। नैदानिक मनोवैज्ञानिकों के सामने परामर्श के प्रारूप की समस्या उत्पन्न होती है। हर केश के लिए अलग-अलग परामर्श दिया जाना चाहिए या हर केश की समस्याओं को ध्यान में रखकर परामर्श का एक सामान्य प्रारूप बनाना चाहिए जो सभी केश के लिए अनुकूल या लाभप्रद हों।

परामर्श के अतिरिक्त नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को प्रशासन संबंधी कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समय-समय पर उन्हें यह सुनिश्चित करना पड़ता है कि रोगी का रिकार्ड (client record) किस तरह रखा जाना

चाहिए। रिकार्ड सही तरीके से रखा जा रहा है या नहीं? रिकार्ड को किस प्रारूप में सुसज्जित किया जाय कि वह उससे अधिक स्पष्ट अर्थ निकाला जा सके।